उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्ययन मार्गदर्शिका

अध्याय एक:

बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र का परिचय

Biblical Education. For the World. For Free.

विषय-वस्तु सूची

इस अध्याय और मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें 3

नोट्स 3

I. **परिचय** (0:19) 4

II. **शब्दावली** (2:25) 4
- क. बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र (2:36) 4
- ख. व्याख्याशास्त्रीय प्रक्रियाऐं (6:14) 5
  1. तैयारी (6:45) 5
  2. जाँच-पड़ताल (8:28) 5
  3. उपयोग (9:50) 6

III. **विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र** (11:25) 6
- क. बाइबल निहित आधार (12:45) 6
- ख. उदाहरण (15:46) 7
- ग. प्राथमिकताएँ (26:15) 8
  1. तैयारी (26:48) 8
  2. जाँच-पड़ताल (28:41) 9
  3. उपयोग (30:15) 9

IV. **भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र** (33:23) 9
- क. बाइबल निहित आधार (35:22) 10
- ख. उदाहरण (38:38) 10
- ग. प्राथमिकताएँ (46:33) 11
  1. तैयारी (47:45) 11
  2. जाँच-पड़ताल (52:35) 12
  3. उपयोग (55:17) 12

V. **सारांश** (58:56) 13

पुनर्विचार हेतु प्रश्न 14

लागू करने हेतु प्रश्न 18

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

इस अध्याय और मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें

इस अध्ययन मार्गदर्शिका को सम्बद्ध वीडियो अर्थात् चलित दृश्य अध्यायों के साथ संयुक्त रूप में उपयोग करने के लिए निर्मित किया गया है। यदि आपके पास वीडियो उपलब्ध नहीं हैं, तो यह अध्ययन मार्गदर्शिका ऑडियो अर्थात् श्रव्य अध्याय और/या अध्याय की मूल प्रतियों के संस्करणों के साथ कार्य करने के लिए भी सहायता देंगे। इसके अतिरिक्त, अध्याय और मार्गदर्शिका की मंशा एक सीखने वाले समुदाय के उपयोग के लिए की गई है, परन्तु साथ ही इनका उपयोग यदि आवश्यक है तो व्यक्तिगत् अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप अध्याय को देखें**
    - **स्वयं को तैयार करें** – किसी भी अनुशंसित अध्यायों को पढ़ कर पूरा कर लें।
    - **देखने के लिए समय निर्धारित करें** – इस मार्गदर्शिका के नोट्स खण्ड में, अध्याय को उन भागों में विभाजित किया गया है जो कि वीडियो के साथ सम्बद्ध हैं। प्रत्येक मुख्य भाग के साथ दिए हुए लघुकोष्ठकों में दिए हुए समय कोड्स का उपयोग, यह निर्धारित करता है कहाँ से अध्याय देखना आरम्भ किया जाए और कहाँ देखना समाप्त होता है। थर्ड मिलेनियम के अध्याय सघनता से सूचनाओं के साथ भरे हुए हैं, इसलिए हो सकता है कि आप इसे कई टुकड़ों में देखना चाहेंगे। इन टुकड़ों को मुख्य भागों के अनुसार होना चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हैं तब**
    - नोट्स बनाएं — अध्ययन मार्गदर्शिका के नोट्स खण्ड अध्याय की मूल रूपरेखा की जानकारी रखते हैं, जिसमें प्रत्येक खण्ड को आरम्भ किए जाने के लिए समय कोड्स और कुँजी नोट्स सम्मिलित हैं जो कि आपका मार्गदर्शन इन सूचनाओं के लिए करेंगे। अधिकांश मुख्य विचारों को पहले से ही सारांशित कर दिया गया है, परन्तु इन्हें स्वयं के नोट्स के द्वारा पूरक किया जाना सुनिश्चित करें। आपको समर्थन देने वाली अतिरिक्त सामग्री को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को स्मरण करने, विवरण देने से और इनका बचाव करने में सहायता प्रदान करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिख लें** – जब आप वीडियो को देखते हैं, तब हो सकता है कि जो कुछ आप सीख रहे हैं उसके प्रति आपके पास टिप्पणियाँ और/या प्रश्न हों। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को हाशिये में लिखें ताकि इन्हें आप अध्याय को देखने के पश्चात् समूह के साथ साझा कर सकते हैं।
    - **अध्याय के भागों को देखते समय लघु ठहराव/पुन: आरम्भ बटन का उपयोग करें –** आप पाएंगे कि कुछ निश्चित स्थानों पर पुनर्विचार के लिए कठिन अवधारणाएँ, या रूचिपूर्ण बातों पर विचार विमर्श या अतिरिक्त नोट्स लिखने के लिए वीडियो का लघु ठहराव या इसे पुन: आरम्भ करना सहायतापूर्ण है।
- **आपके द्वारा अध्याय को देख लेने के पश्चात्**
    - **पुनर्विचार के लिए प्रश्नों को पूरा करें** – पुनर्विचार के लिए प्रश्न अध्याय की मूल विषय-वस्तु के ऊपर आधारित है। आपको उपलब्ध किए हुए स्थान में पुनर्विचार के प्रश्नों के उत्तर को देना चाहिए। इन प्रश्नों को एक समूह की अपेक्षा व्यक्तिगत् रूप से पूरा किया जाना चाहिए।
    - **उपयोग के लिए प्रश्नों का उत्तर दें/विचार विमर्श करें** – उपयोग हेतु प्रश्न ऐसे प्रश्न हैं जो कि इस अध्याय की विषय-वस्तु के साथ सम्बद्ध होते हुए मसीही जीवन यापन, धर्मविज्ञान और सेवकाई से सम्बधित हैं। उपयोग हेतु प्रश्न लिखित गृहकार्यों या समूह के विचार विमर्श के लिए विषयों के लिए उपयुक्त हैं। क्योंकि लिखित गृहकार्यों के लिए, यह अनुशंसा की जाती है कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बा नहीं होना चाहिए।

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:19)

II. शब्दावली (2:25)

क. बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र (2:36)

व्याख्याशास्त्र का किसी तरह के सन्देश या सम्प्रेषण के भाषान्तरण या व्याख्या से होता है।

फ्रेडरिक शलाएरमाकर (1768 – 1834) को आधुनिक व्याख्याशास्त्र का जनक कहा जाता है।

बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र पविशास्त्र के महत्व और अर्थ की व्याख्या करने का अध्ययन है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

ख. व्याख्याशास्त्रीय प्रक्रियाएँ (6:14)

व्याख्याशास्त्रीय प्रक्रियाएँ वह मुख्य क्रियाविधि है जिसका हम तब अनुसरण करते हैं जब हम बाइबल की व्याख्या करते हैं।

1. तैयारी (6:45)

तैयारी में व्याख्याशास्त्रीय प्रक्रियाएं उस समय प्रयोग में आती हैं जब हम पवित्रशास्त्र के किसी एक हिस्से की व्याख्या करना आरम्भ करते हैं क्योंकि हम पवित्रशास्त्र के पास अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं के एक समूह से प्रभावित दृष्टिकोण से आते हैं।

2. जाँच-पड़ताल (8:28)

जाँच-पड़ताल की प्रक्रियाओं में हम हमारे ध्यान को बाइबल के हिस्सों के अर्थ को समझने के लिए केन्द्रित करते हैं।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

3. उपयोग (9:50)

उपयोग वह प्रकिया है जिसमें पवित्रशास्त्र के अर्थ को सही रूप से समकालीन श्रोताओं के साथ जोड़ा जाता है।

III. विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र (11:25)

विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र का संकेत इस ओर है कि कैसे बाइबल के विद्वानों ने पवित्रशास्त्र की व्याख्या एक वैज्ञानिक अभ्यास के दृष्टिकोण के रूप में की है।

क. बाइबल निहित आधार (12:45)

विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र के बाइबल निहित आधार इसे एक तर्कसंगत अभ्यास बना देता है।

बाइबल के लेखकों ने पवित्रशास्त्र की व्याख्या तथ्यात्मक और तार्किक विश्लेषण के दृष्टिकोण से की है (रोमियों 4:3-5)।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

ख. उदाहरण (15:46)

- एलेक्जेंड्रिया का ओरेगन (ई. सन्.,185 – 254)।

- हिप्पो का अगस्टीन (ई. सन्., 354 – 430)

- थॉमस एक्विनास (ई. सन्., 1225 – 1274)

पुनर्जागरण ने (13वीं – 16वीं सदियों तक): शास्त्रीय और बाइबल आधारित पाण्डुलिपियों के प्राचीन ऐतिहासिक संदर्भों और व्याकरण के विश्लेषण करने में समर्पित किया।

प्रोटेस्टेन्ट धर्मसुधारवादी (16वीं सदी) : ने पवित्रशास्त्र के अर्थ को इसके व्याकरण और इसके ऐतिहासिक संदर्भों के विश्लेषण के माध्यम से निर्धारित किया।

सोला स्क्रिपचरा: अर्थात् "केवल पवित्रशास्त्र ही।" प्रोटेस्टेन्टवादियों ने विश्वास किया कि पवित्रशास्त्र की केवलमात्र अचूक व्याख्या स्वयं पवित्रशास्त्र है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

ज्ञानोदय (17वीं एवम् 18वीं सदियों): ने आधुनिक, तथ्यात्मक और तर्कसंगत वैज्ञानिक मानकों के द्वारा सभी तरह के सत्यों के दावों को आंकने के ऊपर जोर दिया, जिसमें पवित्रशास्त्र भी सम्मिलित है।

बाइबल के आधुनिक विद्वान दो मुख्य पथों का पालन करते हैं:

- बाइबल का आलोचनात्मक अध्ययन *सोला स्क्रिपचरा* को अस्वीकार करते हैं और सत्य को समझने के लिए तर्क और वैज्ञानिक विश्लेषण के सर्वोच्च मानक पर ध्यान देते हैं।

- इवैन्जेलिकल बाइबल अध्ययन *सोला स्क्रिपचरा* की पुष्टि करते हैं और वैज्ञानिक विश्लेषण का तब तक समर्थन करते हैं जब तक यह पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं के विरोधी नहीं होते हैं।

ग. प्राथमिकताएँ (26:15)

1. तैयारी (26:48)

बाइबल के व्याख्याकारों ने तैयारी के लिए प्राथमिकताओं को ठीक वैसे ही विकसित किया है जैसी कि शिक्षण की कई अन्य शाखाओं में पाई जाती हैं।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

2. जाँच-पड़ताल (28:41)

पवित्रशास्त्र की जाँच-पड़ताल को दो तरीके:

- श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण: किसी लेख में अर्थ को निकाला हुआ या वहाँ से कोई अर्थ निकाला हुआ। संदर्भ में से अर्थ को पढ़ना।

- श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण: संदर्भ में से अर्थ को पढ़ना।

3. उपयोग (30:15)

उपयोग ऐसे तथ्यों को स्थापित करना है जिसमें बाइबल मसीह के आधुनिक अनुयायियों को विश्वास करने के बारे में सिखाती है।

IV. भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र (33:23)

भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र ऐसी मसीही विश्वासी परम्परा है कि जब हम पवित्रशास्त्र की व्याख्या करते हैं तो उस समय हमें परमेश्वर के निकट आने की हमारी आवश्यकता पर जोर देती है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

क. बाइबल निहित आधार (35:22)

बाइबल के लेखक पवित्रशास्त्र को भक्तिमय रूप से देखने के लिए सम्पर्क करते है।

ख. उदाहरण (38:38)

ओरेगन का ग्रेगरी को लिखे हुए पत्र: ओरेगन ने ग्रेगरी से कहा कि वह दिव्य पठन् या *लेक्टियो डिवाइना* के लिए स्वयं को समर्पित करे।

पूरे मध्यकालीन युग में *लेक्टियो डिवाइना* चार कदमों में व्यवहार में लाई जाती थी:

- *लेक्टियो*: अर्थात् पवित्रशास्त्र का पठन
- *मेडीटियो*: अर्थात् जो कुछ पढ़ा गया उसकी विषय-वस्तु के ऊपर शान्त मनन
- *ओरेटियो*: परमेश्वर से गंभीर प्रार्थना कि वह आत्मबोध को प्रदान करे
- *कन्टम्प्लेटिओ*: अर्थात् परमेश्वर के आत्मा की लिए ठहरना कि वह किसी एक संदर्भ की विशेषता के बारे में उच्च सहज, गहन भावनात्मक और परिवर्तित करने वाली कायलता के भाव को प्रदान करे।
-

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

जॉन कैल्विन : आरम्भिक सुधारवाद के समय में बाइबल का सबसे ज्यादा तर्कसंगत और तार्किक व्याख्याकार जिसने विज्ञान आधारित और भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र की विधियों को अपनाया।

जोनाथन एडवर्ड (1703 – 1758): कुशल तर्कसंगत और तार्किक विश्लेषणात्मक रहा, परन्तु उसका विश्वास था कि पवित्रशास्त्र को परमेश्वर की उपस्थिति के गहरे सहज ज्ञान से युक्त भावना के साथ भी पढ़ा जाना चाहिए।

ग. प्राथमिकताएँ (46:33)

1. तैयारी (47:45)

हमें परमेश्वर के निकट आना चाहिए यदि हम परमेश्वर की विशेष उपस्थिति का अनुभव करना चाहते हैं (याकूब 4:8)।

भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र में पवित्रीकरण या परमेश्वर के लिए पवित्र अभिषेक सम्मिलित होता है।

तैयारी के तीन आयाम :

- वैचारिक : हमें परमेश्वर के सच्चे वचन के प्रति अपने विश्वास की पुष्टि करनी चाहिए।
- व्यावहारिक: हमें अपनी असफलताओं के लिए पश्चाताप और व्यवहार में ऐसे गंभीर इच्छा होनी चाहिए जिस से कि परमेश्वर प्रसन्न हो।
- भावनात्मक : हमें हमारे सभी व्यवहारों को सम्मिलित करना चाहिए।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

2. जाँच-पड़ताल (52:35)

भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ की जाँच-पड़ताल इस तरीके से करना है जो हमें परमेश्वर की निकटता में लाए।

जाँच-पड़ताल के तीन आयाम :

- वैचारिक : उन विचारों पर ध्यान देना जिन्हें परमेश्वर ने मूल श्रोताओं के लिए इच्छित किया है ।

- व्यावहारिक : कैसे बाइबल के लेखकों और उनके श्रोताओं के कार्य परमेश्वर की निकटता में आने के उनके अनुभव को प्रभावित करते हैं।

- भावनात्मक : मूल अर्थ के भावनात्मक आयामों को बाहर निकालना।

3. उपयोग (55:17)

पवित्रशास्त्र को परमेश्वर की उपस्थिति में पढें ताकि परमेश्वर ने इच्छित किया है वैसे ही परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में लागू कर सकें।

उपयोग के तीन आयाम :

- वैचारिक: कैसे परमेश्वर स्वयं के प्रति हमारी अवधारणाओं को, और पवित्रशास्त्र के द्वारा बाकी की सृष्टि और मानवता के प्रति है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

- व्यावहारिक: कैसे हमारा व्यवहार परमेश्वर की उपस्थिति के द्वारा प्रभावित होता है जब हम पवित्रशास्त्र का चिन्तन करते हैं।
- भावनात्मक: कैसे हमारे व्यवहार और भावनायें परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में पवित्रशास्त्र को पढ़ने के द्वारा प्रभावित होते हैं।

V. सारांश (58:56)

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

पुनर्विचार हेतु प्रश्न

1. बाइबल उपस्थिति व्याख्याशास्त्र क्या है?

2. तीन मुख्य व्याख्याशास्त्रीय प्रक्रियाओं का विवरण दें।

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org

3. वैज्ञानिक व्याख्याशास्त्र के बाइबल आधारित आधार क्या हैं?

4. वे कुछ ऐतिहासिक उदाहरण कौन से हैं जो वैज्ञानिक व्याख्याशास्त्र के विकास को दर्शाते हैं ?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

5. पवित्रशास्त्र के लिए वैज्ञानिक व्याख्याशास्त्र का उपयोग करने के लिए प्राथमिकताओं का विवरण दें ?

6. भक्तिमयी व्याख्याशास्त्र के बाइबल निहित आधार क्या हैं?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

7. बाइबल के उन कुछ विद्वानों के ऐतिहासिक उदाहरण कौन से हैं जो भक्तिमयी व्याख्याशास्त्र को व्यवहार में लाए?

8. कैसे भक्तिमयी व्याख्याशास्त्र व्याख्या की प्रक्रियाओं के लिए हमारी प्राथमिकताओं को आकार देता है?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

लागू करने हेतु प्रश्न

1. कैसे बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र को लागू करना हमारे उन तरीको को परिवर्तित करता है जिनमें आप बाइबल को समझते हैं?

2. कैसे आप व्यक्तिगत् रूप से या एक समूह के संदर्भ में पवित्रशास्त्र के अध्ययन के लिए स्वयं को तैयार करते हैं?

3. कैसे पवित्रशास्त्र की व्याख्या एक तरह से एक वैज्ञानिक अभ्यास की तरह है जो कि आपकी व्याख्या को प्रभावित करती है?

4. कौन से सांत्वना और उत्साह आप इस सच्चाई से पा सकते हैं कि बाइबल के लेखक अक्सर पवित्रशास्त्र की अपनी व्याख्या को तथ्य आधारित और तर्कसंगत विश्लेषण को ध्यान में रखते हुए करते हैं ?

5. किस तरह से *सोला स्क्रिपचरा* बाइबल के आपके पठन् और व्याख्या में आप की सहायता और मार्गदर्शन करना चाहिए?

6. वैज्ञानिक व्याख्याशास्त्र के ऐतिहासिक उदाहरणों से आप किस तरह का आश्वासन प्राप्त कर सकते हैं?

7. जब आप अपनी समकालीन परिस्थिति में पवित्रशास्त्र का पठन् और व्याख्या करते हैं तो कैसे परमेश्वर की निकटता में आते हैं?

8. पवित्रआत्मा के ऊपर निर्भर रहते हुए प्रार्थनापूर्वक पवित्रशास्त्र के निकट अध्ययन के लिये आना आपके लिए कितना अधिक महत्वपूर्ण है?

9. पवित्रशास्त्र की भक्तिमयी पद्धति से आपने किस तरह के लाभों को प्राप्त किया है?

10. अपने पापों का अंगीकार करते रहने के विश्वासयोग्य अभ्यास ने किस तरह से बाइबल के प्रति आपकी समझ को प्रभावित किया है?

11. इस अध्याय से कौन सी सबसे महत्वपूर्ण बात को आपने सीखा है?

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org